International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 01-01-2020; Accepted: 02-02-2020; Published: 01-03-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 01-03

'नीला चाँद' उपन्यास: इतिहास का एक जीवन्त दस्तावेज

दुर्गा प्रसाद पटेल
शोधार्थी, हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास 'नीला चाँद' को साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजे जाने के बाद उनका व्यास सम्मान से अलंकृत होना एक महत्त्वपूर्ण घटना सिद्ध हुई, क्योंकि यह आधुनिकता और प्रगतिशीलता दोनों की दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है। मध्यकालीन काशी का चित्रण करने के लिए उन्हें ऐसे समय का चुनाव करना था जो काशी की जनता तथा समाज को पूरी तरह भयानक उथल-पुथल से मथ दे। सबसे निचले वर्ग के सर्वबहिष्कृत चांडालों और डोमों से लेकर महिमाशाली ब्राम्हण, राजा, महाजन और सेठो को नग्न खड़ा कर दे। प्रस्तुत उपन्यास में गंगा से लेकर मंदिरों तक, आभूषणों से लेकर खाद्य पदार्थों तक, साहित्य से लेकर अध्यात्म तक, वस्त्रों से लेकर शस्त्रों तक सब का सजीव चित्रण हुआ हैं। साहित्यकारों का अपना एक दायित्व होता है। आधुनिक साहित्यकारों पर बिना कुछ कहे लेखक अपने उपन्यास के माध्यम से कहता है कि कवि मिथ्या को शाब्दिक आडंबर में पेश करने वाला एक मसखरा समझ रहा है। वह अपने को चतुर्दिक जो घट रहा है, उसे तोप-ताप कर असत्य को सुंदर पात्र में रखकर प्रस्तुत करने वाला बहरूपिया है। उपन्यास का मूल्यांकन करने के पश्चात् देखा जा सकता है कि इसका कथानक ऐतिहासिकता को समेटे हुए है, किन्तु इसे परंपरागत ऐतिहासिक उपन्यासों से हटकर भी माना जा सकता हैं।

मुख्य शब्द: ऐतिहासिक पुरातात्विक अवशेष, मध्यकाल, धार्मिक आडंबर, आधुनिकता, धार्मिक सहिष्णुता।

प्रस्तावना
डॉ. शिवप्रसाद सिंह हिंदी जगत में एक मूर्धन्य कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनका रचना क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। उपन्यास एवं कहानी दोनों विधाओं में उनका अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय योगदान है। उन्होंने औपन्यासिक कृतियों और कहानियों के माध्यम से भारतीय इतिहास से लेकर वर्तमान के इतिहास को अभिव्यक्त करते हुए भारतीय जीवन और समाज की नूतन एवं जीवंत व्याख्या की है। शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास 'वैश्वानर', 'नीला चाँद', 'कोहरे में युद्ध', 'दिल्ली दूर है', आदि इतिहास की पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। इन उपन्यासों में ऐतिहासिक दृष्टिकोण से समकालीन परिप्रेक्ष्य में अच्छा संबंध कायम किया गया है। उन्होंने ऐतिहासिक पुरातात्विक अवशेषों और इतिहास से मूल्यवान प्रसंग चुनकर उसे वर्तमान की समसामयिक संदर्भों से जोड़ा है। शिवप्रसाद सिंह अपने उपन्यासों में दलितों, स्त्रियों एवं अल्पसंख्यक लोगों की पीड़ा एवं उस पीड़ा से मुक्ति पाने हेतु संघर्ष की कामना करते हैं।

शिवप्रसाद सिंह कृत 'नीला चाँद' मध्यकालीन काशी पर लिखा गया उपन्यास है। इस सन्दर्भ में स्वयं शिवप्रसाद सिंह उपन्यास 'नीला चाँद' की भूमिका में लिखते हैं कि, "मैं मध्यकाल की वह काशी देखना चाहता था जो विदेशी आक्रांताओं के पहले थी।" [1] अतः इसमें इतिहास का आ जाना स्वाभाविक है। मध्यकाल की व्यवस्था के सन्दर्भ में रोमिला थापर कहते है कि, "मध्यकालीन भारतीय राज्य इस अर्थ में नकारात्मक दृष्टि से धर्मनिरपेक्ष था कि वह धर्म को राजनीति के मातहत रखता था, न कि राजनीति को धर्म के मातहत।" [2] शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास 'नीला चाँद' को साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजे जाने के बाद उनका व्यास सम्मान से अलंकृत होना एक महत्त्वपूर्ण घटना सिद्ध हुई, क्योंकि यह आधुनिकता और प्रगतिशीलता दोनों की दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है। मध्यकालीन काशी का चित्रण करने के लिए उन्हें ऐसे समय का चुनाव करना था जो काशी की जनता तथा समाज को पूरी तरह भयानक उथल-पुथल से मथ दे। सबसे निचले वर्ग के सर्वबहिष्कृत चांडालों और डोमों से लेकर महिमाशाली ब्राम्हण, राजा, महाजन और सेठो को नग्न खड़ा कर दे। 'नीला चाँद' में केवल कीर्ति सिंह का संघर्ष ही नहीं अपितु मध्यकालीन काशी का भी समग्रता से चित्रण हुआ है। उस समय की राजनीति, समसामयिक बदलाव, धार्मिक आडंबर आदि सबका लेखक ने प्रभावी ढंग से चित्रण किया हैं। भयंकर उथल-पुथल के बीच भी काशी की संस्कृति अपने आप में आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। प्रस्तुत उपन्यास में गंगा से लेकर मंदिरों तक, आभूषणों से लेकर खाद्य पदार्थों तक, साहित्य से लेकर अध्यात्म तक, वस्त्रों से लेकर शस्त्रों तक सब का सजीव चित्रण हुआ हैं।

कीरत अर्थात् कीर्ति वर्मा चंदेल सम्राट विद्याधर का पौत्र, विजयपाल का बेटा और देव वर्मा का छोटा भाई है। 'जुझौती' आज का बुंदेलखंड पर चंदेलों ने लगभग सात सौ वर्ष तक राज्य किया था। चंदेलो का इतिहास संघर्ष का इतिहास रहा है। विद्याधर अपने व्यक्तित्व के कारण संपूर्ण उत्तर पद पर छा गए थे, परंतु उनका पुत्र देव वर्मा उनकी परंपरा को आगे न बढ़ा सका। वह प्रशासन से उदासीन था। उसका मानना था कि यदि मैं किसी दूसरे राज्य की सीमा का अतिक्रमण नहीं करूंगा तो मेरे राज्य की सीमा का भी कोई अतिक्रमण नहीं करेगा। अतः उसने अपने राज्य की सीमाओं को असुरक्षित छोड़ दिया। परिणामस्वरुप हुआ यह कि विद्याधर ने जिस गांगेयदेव को अपना दास बनाकर रखा था, उसी के पुत्र कलचुरी ने देव वर्मा की हत्या कर दी। कीरत के शब्दों में, "देखो गोविंद, यह एक लम्बा रास्ता है, पर इसे पार करना भी हमारा ही उत्तरदायित्व हैं। मेरे भ्राता देव वर्मा की हत्या इसलिए हुई क्योंकि वह दस वर्षों तक प्रजा से कटे रहे। उन्होंने गांव, पुर, नगर, जंगल, उद्यान, नदी तथा नाले सबसे अपना संबंध तोड़ लिया। ऐसे निष्क्रिय राजा की प्रजा यदि स्वयं हत्या कर देती तो भी मुझे आश्चर्य नहीं होता।" [3] जिस राज्य का शासक गुप्तचर से मिलने के लिए समय निकाल नहीं पाता उसे तो पराजित होना ही था। उसकी पत्नी ही सवाल किया करती थी कि क्या यह आवश्यक है कि राजगद्दी पर जेष्ठ व्यक्ति का आयोग पुत्र ही बैठे। उसे देव वर्मा की नीयत पता थी, इसीलिए वह बार-बार कीरत को शासन हाथ में लेने के लिए कहती रहती थी।

कीरत 'नीला चाँद' उपन्यास का सर्वश्रेष्ठ पात्र है। जिसकी महिमा शिवप्रसाद सिंह के उन कथनों में देखी जा सकती है जहाँ कीरत के भव्य स्वागत एवं सम्मान की तैयारी कुछ इस प्रकार से की गई है, "तो तनिक ध्यान से सुनो, ये है सौ सुवर्ण मुद्राएं। इससे अन्न आदि सारे समान का प्रबंध करो। चार-पांच शय्याएं चाहिए। अपने राजेश्वर कीरत आ रहे हैं। उनके साथ कई लोग हैं।" [4] काशी में दो राजा थे एक कर्ण कलचुरी और दूसरा गहड़वाल चंद्रदेव। गांगेय दत्त से गाहडवालों ने कभी संधि की थी; इसलिए दोनों राजाओं की राजधानी काशी बनी थी, पर कर्ण ने गाहडवालों का जीना मुश्किल कर रखा था। वे अपनी रक्षा कर पाने में भी

असमर्थ थे, तो कीरत की मदद क्या कर पाते। उनकी प्रजा दुःख और दरिद्रता में जीवन जी रही थी। गरीब बब्बर नट को कलचुरी सैनिक बार-बार प्रताड़ित कर रहे थे और ये कर्ण का समर्थन, साथ ही विनायक भट्ट गाहडवालो में आस्था रखने वाले बलदेव ओझा का बार-बार अपमान किया करते थे।

इतिहास के सन्दर्भ में प्रकाशचन्द्र भट्ट लिखते है कि, "इतिहास का प्रश्न मानव-समाज का बुनियादी प्रश्न है। मानव समाज यदि पूरी तरह जीनों या आनुवांशिकी द्वारा नियंत्रित होता तो इतिहासबोध का सवाल सांस्कृतिक और अनिवार्य सवाल न होकर गैरजरूरी सवाल होता। इतिहास के प्रति अपनाए गए नजरिए से उसकी भावपरकता, आधुनिकता, प्रतिगामी या प्रगतिशील जीवन दृष्टि और उसके तमाम अन्तर्विरोधों का मूल्यांकन किया जा सकता हैं।" [5] 'नीला चाँद' ऐतिहासिक उपन्यास है शाब्दिक दृष्टि से इतिहास का अर्थ है 'ऐसा ही था' या 'ऐसा ही हुआ' इस दृष्टि से अतीत के किसी भी वास्तविक विवरण को इतिहास की संज्ञा दी जाती है। परंतु रचनाकार इतिहास लिखते समय केवल इतिहास को नहीं सुनता इतिहास के साथ-साथ कुछ काल्पनिक प्रसंग और पात्रों को जोड़ने की स्वतंत्रता भी उसे होती है। ऐसा न होने पर वह रचना मात्र इतिहास बन जाएगी, उपन्यास नहीं। वैसे अतीत के गर्भ में इतना कुछ छिपा रहता है कि उसे समग्र रूप में प्रस्तुत करना किसी भी इतिहासकार अथवा साहित्यकार के बस की बात नहीं है। इसलिए साहित्यकार अपनी-अपनी रुचि एवं दृष्टि के अनुसार इतिहास अथवा अतीत के कुछ पक्षो को ही अपने-अपने शब्दों में प्रस्तुत करते हैं। अतः यहां यही देखना है कि 'नीला चाँद' मे इतिहास की मात्रा कितनी है और लेखकीय कल्पना की मात्रा कितनी है। 'नीला चाँद' का नायक कीरत अर्थात् कीर्तिसिंह ऐतिहासिक पात्र है। कीर्तिसिंह चंदेल वंशीय सम्राट विद्याधर का पौत्र है। चंदेलों के राज्य को जुझौती कहा जाता था। इस वंश का सूर राजा जयसिंह जेजाक के नाम पर ही आज के बुंदेलखंड को उस समय जुझौती या जेजाक भुक्ति कहा गया। उपन्यास में विद्याधर की वीरता का भी बार-बार उल्लेख हुआ है। विद्याधर द्वारा राज्यपाल कन्नौज के राजा को दंड दिए जाने की घटना का उपन्यास में कई बार उल्लेख मिलता है जिसका उपन्यास के कथ्य से संबंध है।

चंदेलों पर कर्ण कलचुरी के आक्रमण तथा देव वर्मा की हत्या की घटना भी पूर्णता ऐतिहासिक है। देव वर्मा की हत्या के बाद उपन्यास में चित्रित कीरत का संघर्ष सेनापति गोपाल भट्ट का सहयोग, कर्ण की पराजय आदि घटनाएं ऐतिहासिक हैं। सेनापति गोपाल की वीरता का तो अनेक ग्रंथों में विशेष उल्लेख हुआ है। उपन्यास में कृष्ण मिश्र नामक कवि भी एक पात्र के रूप में चित्रित है। जिनका इतिहास में 'प्रबोध चंद्रोदय' नामक नाटक लिखने वाले कवि कृष्ण मिश्र का कीर्ति वर्मा के दरबारी कवि के रूप में उल्लेख मिलता है। अर्थात् यह भी एक ऐतिहासिक पात्र हैं। इतिहास में चंदेलों की उत्तम शासन, प्रबल सेना सामर्थ, धार्मिक सहिष्णुता का बार-बार उल्लेख हुआ है, पर इस सब के बावजूद शिवप्रसाद सिंह इतिहास को कहीं बाधित नहीं होने देते हैं।

शिवप्रसाद सिंह ने इतिहास के साथ-साथ कल्पना का भी उचित समन्वय किया है। इस दृष्टि से बब्बर नटएशीला मां और भरत डोम का विद्रोह आदि बातें काल्पनिक कहीं जा सकती है। परंतु लेखक कि यह काल्पनिकता इतिहास को कहीं भी बाधा नहीं पहुंचाती। इसी सन्दर्भ में नित्यानंद तिवारी लिखते है कि, "किसी साहित्य का इतिहास उसके राष्ट्र के इतिहास से अलग नहीं होता। इतिहास के आधारभूत तथ्य नहीं बदलते लेकिन इतिहासकारों द्वारा उन पर दिया जाने वाला बलाघात बदल सकता हैं।" [6] इस समय उपन्यास के माध्यम से ऐतिहासिक पात्र- भरत डोम, बब्बर नेट हैं, तो उस समय इतिहास में कोई दूसरा नाम धारण करने वाले रहे होंगे। परंतु दोनों की प्रवृत्ति निश्चित ही एक रही होगी। शिवप्रसाद सिंह का मानना है कि "मैंने बनारस पर त्रयी की घोषणा की थी...उसे पूरा करना होगा। इसलिए मुझे मध्यकाल में जाना पड़ा" [7] इस प्रकार लेखक बनारस की मध्यकालीन संस्कृति को चित्रित करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने ऐतिहासिक पात्रों, घटनाओं, आदि के सहारे ऐतिहासिक दृष्टिकोण को अभिव्यक्त किया हैं।

नीला चाँद' एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है। जिसका फलक विस्तृत है। शिवप्रसाद सिंह के सभी उपन्यासों में 'नीला चाँद' सबसे बड़ा है आकार में और आयाम में भी। इसकी बहुआयामिता भी संभवतः इसकी इस स्वीकृति का एक कारण है। काशी को केंद्र बनाकर 'नीला चाँद' लिखा जरूर गया है, किन्तु यह एक हजार साल पहले के भारत को, उसके रहन-सहन को, अचार-विचार को और सभ्यता-संस्कृति आदि को जीवंत रूप में प्रस्तुत करने की एक कोशिश है। 'नीला चाँद' एक विशेष कालखंड की अनेक धार्मिक सांप्रदायिक हलचलों एवं सांस्कृतिक दार्शनिक रुझानों को समेटकर आगे बढ़ता है। इसमें मुख्य रूप से तीन राजवंशो की कहानी है और प्रतिहार सामंत रामेश्वर का परिवार गौड रूप में शामिल है। लेखक अनेक बार अनेक प्रमुख पात्रों द्वारा 'जुझौती' की जनता के जागरण और संगठन का आह्वान करता है। इसके लिए छोटे बड़े पात्रों की सृष्टि भी वह करता है। कलचुरी राजा कर्णदेव उसकी हूण पत्नी आवल्ल देवी पुत्र-पुत्रियां और जमाता आदि अनेक अच्छे-बुरे पात्र मौजूद हैं। गहड़वाल नरेश चंद्र देव का पौत्र युवराज गोविंद सिंह किशोरावस्था पार करके यौवन की दहलीज पर खड़ा है। जो कीरत सिंह को बड़े भाई और गुरु जैसा सम्मान देता है। वह गढ़वाल राजवंश के इतिहास का भावी युग पुरुष है जिसके संकेत यहां भी विद्यमान है। गोविंद की मां और गढ़वाल रानी राल्हदेवी का चरित्र इसलिए विचार्य है कि पूरी कथा व कीरत को बेटा तथा अपने को 'कृष्ण की यशोदा जैसी' मां मानती रही लेकिन थोड़ी सी विषम परिस्थितियां आ जाने पर कुछ ऐसा पलटी नागिन की तरह कि दत्तक पुत्री गोमती तक को चरित्रहीन और कीरत को जबरदस्ती युद्ध में झोंक देती हैं। गोविंद की मां देवी राल्ह कह रही थी कि कीरत ने बलात् मेरी बेटे पर युद्ध थोप दिया है। वह अभी कितने दिनों का है; मेरा इकलौता बेटा बंधक रख लिया गया। कीरत ने मेरे तीन सहस्र अवरोही छीन लिए। ऐसा चरित्रहीन व्यक्ति तो मैंने आज-तक नहीं देखा।

मध्यकालीन काशी के धार्मिक महिमा पर कुठाराघात के सन्दर्भ मे पं. कुबेरनाथ सुकुल कहते है कि, "काशी की धार्मिक महत्ता की खोज में मनुस्मृति से कुछ सूचना मिलती हैं। वहां आर्य-देश को चार भागों में विभाजित किया गया है, जो केंद्र से प्रारंभ होकर बराबर फैलते गए हैं और इसी प्रकार उनका महात्म्य भी कम होता गया है।" [8] काशी में धर्म के प्रति मंदिर भोग और विलास का प्रतीक गणिका और कला के प्रतीक स्वर्ण येशस्करी से सजे वस्त्र आभूषण रहे हैं। इन तीनों के अभाव में काशी की कल्पना अधूरी है। उपन्यास में काशी की अंतरात्मा को उद्घाटित करने वाले इन बिंदुओ पर; ग्यारहवी सती के काशी के संदर्भ में विस्तार से चर्चा हुई है। काशी के ऐतिहासिक मंदिर काशी की सांस्कृतिक विरासत है। 'नीला चाँद' उपन्यास में अनेक मंदिरों, तीर्थ और ऐतिहासिक इमारतों का यथास्थान उल्लेख हुआ है। जैसे- नंददीश्वकर मंदिरए, विश्वेश्वर मंदिरए, महालय, केदारेश्वर, इत्यादि।

'नीला चाँद' उपन्यास पर एक आरोप यह भी लगता रहा कि यह गड़े मुर्दे उखाड़ने की बात करता है। वस्तुतः जो ऐतिहासिक उपन्यास होते हैं वहां सारा इतिहास रचनाकार की कल्पना शक्ति द्वारा पुनः सृजित होता है। लेकिन यह कल्पना शक्ति वर्तमान से ऊर्जा ग्रहण करती है, इसलिए ऐतिहासिक उपन्यासों को वर्तमान के द्वंद से नहीं बचाया जा सकता जो स्वाभाविक भी है। इतिहास में प्रवेश करते समय भी लेखक वर्तमान को नहीं भूलता कुछ प्रसंगों के आधार पर इसकी चर्चा करता हैं। 'नीला चाँद' मैं ऐसे अनेक प्रसंग चित्रित है, जिनमें वर्तमान की चिंता झलकती है। इतिहास के माध्यम से वर्तमान की धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियों पर किया गया भाष्य भी देखने योग्य है। आज मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा चर्च आदि को लेकर राजनीति की जाती है।

साहित्यकारों का अपना एक दायित्व होता है। आधुनिक साहित्यकारों पर बिना कुछ कहे लेखक अपने उपन्यास के माध्यम से कहता है कि, कवि मिथ्या को शाब्दिक आडंबर में पेश करने वाला एक मसखरा समझ रहा है। वह अपने को चतुर्दिक जो घट रहा है, उसे तोप-ताप कर असत्य को सुंदर पात्र में रखकर प्रस्तुत करने वाला बहरूपिया है। स्वयं शिवप्रसाद जी 'नीला चाँद' में असत्य को छिपाने का प्रयत्न नहीं करते और सत्य को छिपने नहीं देते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि इस उपन्यास का मूल्यांकन करने के पश्चात् देखा जा सकता है कि इसका कथानक ऐतिहासिकता को समेटे हुए है, किन्तु इसे परंपरागत ऐतिहासिक उपन्यासों से हटकर भी माना जा सकता हैं।

सन्दर्भ सूची

1. शिवप्रसाद सिंह, नीला चाँद, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, आवृत्ति 2017, पृष्ठ: 2
2. रोमिला थापर, इतिहास की पुनर्व्याख्या, नयी दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण 1991, पृष्ठ: 114
3. शिवप्रसाद सिंह, नीला चाँद, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, संस्करण 2017, पृष्ठ: 104
4. वही, पृष्ठ: 141
5. प्रकाशचन्द्र भट्ट, इतिहास-बोध प्रतिरोध और संस्कृति, कानपुर : विकास प्रकाशन, संस्करण 2018, पृष्ठ: 24
6. नित्यानंद तिवारी, आधुनिक साहित्य और इतिहास-बोध, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाश, संस्करण 1994, पृष्ठ: 23
7. शिवप्रसाद सिंह, मेरे साक्षात्कार, नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, संस्करण 1995, पृष्ठ: 28
8. पं. कुबेरनाथ सुकुल वाराणसी-वैभव, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, द्वितीय संस्करण 2008, पृष्ठ: 5